P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-11* July- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बुद्ध की हस्त मुद्राओं का महत्व

सारांश

प्राचीन काल से ही बौद्ध धर्म चर्चा का विषय रहा है। भगवान बुद्ध के चित्रों या मूर्तियों को देखकर उनकी भाव–भंगिमा एवं उनकी मुद्राओं द्वारा उनकी शिक्षा या उपदेश हम सभी के समक्ष प्रदर्शित हो रहे हैं।

प्राचीन काल में बौद्ध धर्म की सम्पन्न भगवान बुद्ध की मुद्राओं के अवशेषों को सम्पूर्ण वश्वि में स्थान प्राप्त है। कुषाण कालीन मथुरा की मूर्तिकला में जिस समय बुद्ध प्रतिमाओं का निर्माण हो रहा था उसी समय गांधार के शिल्पियो ने भी बुद्ध प्रतिमा का निर्माण प्रारम्भ किया, किन्तु गांधार कला में निर्मित बुद्ध की प्रतिमा मथुरा में निर्मित प्रतिमाओं से सर्वथा भिन्न रूप वाली है। बुद्ध की प्रतिमाओं का निर्माण कुषाणों के शासन काल में मथुरा और गांधार दोनों ही कला शैलियों में किया गया है। भगवान बुद्ध की मुद्राओं की बात की जाए तो वह मुख्यतः चर्चित रही मुद्राओं में अभय मुद्रा, अरद मुद्रा, धर्म चक्र प्रवर्तन मुद्रा, ध्यान मुद्म भूमिस्पर्श मुद्रा आदि विधित मुद्राओं में सिखी गई भावमयी बुद्ध मूर्तियों न केवल नेत्रानन्द का ही विषय है, अपितु उनकी नैसर्गिक सौन्दर्य आभा हृतन्त्री के तारों को झंकृत कर आत्मस्थ सौन्दर्य उद्बुद्ध करती है।

मुख्य शब्द : बुद्ध प्रतिमा, गांधार कला, मुद्रा।

प्रियंका कुमारी
शोधार्थिनी,
चित्रकला विभाग,
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट,
दयालबाग, आगरा, भारत

प्रस्तावना

भारत में बौद्ध धर्म का युग–बौद्ध चित्रकला का भारत में आरम्भ (50ई. सं700ई) पहली शताब्दी के प्रारम्भ हम अपने को भारतीय कला के प्रतिष्ठित युग के प्रभाव में पाते हैं। इस समय बौद्ध धर्म राजाश्रय प्राप्त कर राज धर्म हो गया था और लगभग 700–50ई. तक हिन्दु धर्म के पुनः आगमन अपना प्रभुत्व बनाये रखा। इस समय भारत समस्त पूर्वी विश्व को मार्ग दिखा रहा था औश्र उसे समय भारत के बौद्ध धर्म को ऐशिया अपनी प्रेरणा का केन्द्र मानने लगा था। अपनाने के स्वभाव के कारण ही बौद्ध धर्म इतना फैला और उसकी सभ्यता एवं शिक्षा सभी स्थानों पर फैली, परन्तु कला के क्षेत्र में यह सबसे अधिक मशहूर हुई। पूर्णी कला पर जितना बौद्ध धर्म का प्रभाव दिखाता है उतना शायद ही कहीं की कला पर दूसरी कला का प्रभाव दिखाई पड़ता है जैसे बौद्ध धर्म संसार में फैला वैसे–वैसे कला द्वारा धर्म के चित्रों का भी प्रचार हुआ। 17वीं शताब्दी में 'लामातारा नाथ' का कहना था कि जहाँ–जहाँ बौद्ध धर्म का प्रचार हुआ है वहाँ उसके कलाकार भी मिलते हैं।

ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् महात्मा बुद्ध सर्वप्रथम सारनाथ (बनारस के निकट) में अपने पूर्व के पाँच सन्यासी साथियों को उपदेश दिए। इन शिष्यों को पंचवर्गीय कहा गया। महात्मा बुद्ध द्वारा दिए गए उपदेशों की घटना को धर्म–चक्र–प्रवर्तन कहा जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य कला और धर्म के सौन्दर्यात्मक सम्बन्ध के माध्यम से भगवान बुद्ध की हस्तमुद्राओं का सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिवेश की भूमिका को विशेष रूप से प्रस्तुत करना है।

साहित्यावलोकन

किसी भी कला में भाव–भंगिमा एवं मुद्रायें विशेष रूप से आवश्यक होती है, जिसमें मुख्य रूप से हस्तमुद्राऐं महत्वपूर्ण सीन रखती हैं। हस्त मुद्राओं को विस्तार से समझा जाए तो तान्त्रिक ग्रन्थों में ब्राह्मण ग्रंथों में नाट्यशास्त्रों में, योग में और आगम ग्रन्थों में हस्त मुद्राओं का विपुल साहित्य भरा पड़ा है। कई विद्वान मुद्राओं को तीन वर्ग में विभाजित करते हैं–वैदिक, तान्त्रिक और लौकिक। (ओ.सोमपुरा पद्मश्री–प्रभा शंकार–भारतीय शिल्प संहिता, शिल्प विशारद, अहमदाबाद–1975) बुद्ध प्रतिमा का निर्माण, बौद्ध धर्म के इतिहास की कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। धर्म का निरन्तर विकास एवं इस दिशा में प्रयास के सदियों बाद बुद्ध की प्रतिमा का निर्माण सम्भव हुआ। बौद्ध धर्म के आरम्भिक

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-11* July- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

स्वरूप (हीनयान) में बुद्ध अन्य अरहतों से श्रेष्ठ समझे गये। इसमें संदेह नहीं कि उनका जन्म, लक्ष्य और मृत्यु भी अद्‌भुत है, परन्तु बौद्ध धर्म के इस रूप में उनका निर्वाण अन्य अहरतों से भिन्न नहीं है। बौद्ध धर्म के इस चरण में यह विश्वास किया जाता था कि परिनिवृत बुद्ध संसार में हस्तक्षेप नहीं कर सकते हैं। बुद्ध मसीहा नहीं थे उन्होंने स्वयं ही कहा था कि निवारण के लिए प्रत्येक प्रयास करना होगा, अपना दीपक स्वयं बनाना होगा।

कुषाण कालीन मथुरा की मूर्ति कला में जिस समय बुद्ध प्रतिमाओं का निर्माण हो रहा था उसी समय गांधार के शिल्पियों ने भी बुद्ध प्रतिमा का निर्माण प्रारम्भ किया किन्तु गांधार कला में निर्मित बुद्ध की प्रतिमा मथुरा में निर्मित प्रतिमाओं से सर्वथा भिन्न रूप वाली है। बुद्ध की प्रतिमाओं का निर्माण कुषाणों के शासन काल में मथुरा और गांधार दोनों ही कला शैलियों में किया गया है।

बुद्ध प्रतिमाओं को विभिन्न मुद्राओं में निर्मित किया गया है जैसे–

1. अभय मुद्रा
2. भूमिस्पर्श मुद्रा
3. वरद मुद्रा
4. धर्मचक्र प्रवर्तन मुद्रा
5. ध्यान मुद्रा
6. कर्ण मुद्रा
7. वज्र पद्‌मा मुद्रा
8. वितर्क मुद्रा
9. उत्तर बोधि मुद्रा
10. नमस्कार या अंजली मुद्रा।

अभय मुद्रा (भयरहित मुद्रा)

सुरक्षा, शांति, परोपकार और भय को दूर करने का प्रतिनिधित्व करती है। इस मुद्रा में आमतौर पर दाहिना हाथ कंधे की ऊँचाई तक उठा होता है, बांह मुड़ी होती है और हथेली बाहर की ओर हुआ करती है और अंगुलियाँ ऊपर की ओर तनी तथा एक दूसरे से जुड़ी होती हैं और बायां हाथ खड़े रहने पर नीचे की ओर लटका होता है। थाईलैण्ड में यह मुद्रा चलते हुए बुद्ध से सम्बद्ध है। अक्सर दोनों हाथों को उठाकर दो गुना अभय मुद्रा में दिखाया जाता है, यह अपरिवर्तनशील है। किसी अजनबी के सामने दोस्ती का प्रस्ताव रखने के अच्छे इरादे के प्रतीक के रूप में यह मुद्रा शायद बौद्ध धर्म की शुरूआत से पहले इस्तेमाल किया जाता रहा है। गांधार कला में उपदेश देते समय इसे देखा गया है। चौथी और सातवीं सदी के वेई और सुई काल में इसका अध्ययन करने पर बुद्ध द्वारा इस मुद्रा का प्रयोग करके उसे शांत किया गया था। विभिन्न भित्ती चित्रों और आलेखों में इसे दिखाया गया है। महायान में, उत्तरी सम्प्रदाय के देवताओं को अक्सर दूसरे हाथ का उपयोग करके अन्ध मुद्रा के साथ दिखाया जाता है। जापान में, जब अभय मुद्रा का प्रयोग किया जाता है तब बीच की अंगुली को थोड़ा आगे की ओर निकाल दिया जाता है, यह शिनगोन सम्प्रदाय का एक प्रतीक है।

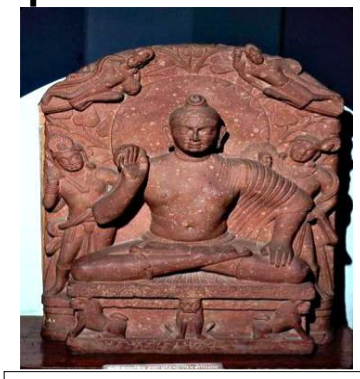

चित्र सं.–1 अभय मुद्रा

भूमि स्पर्श मुद्रा

इस मुद्रा में बुद्ध का बायां हाथ अंक में तथा दाहिना हाथ आसन पर नीचे पृथ्वी की और संकेत करते हुए प्रदर्शित किया गया है। इस मुद्रा का अभिप्राय यह बताना है कि बुद्धत्त्व प्राप्ती के बाद बुद्ध ने भार पर जो विजय प्राप्त की थी उसकी साक्षी पृथ्वी है। इस प्रकार की प्रतिमाओं में कभी–कभी बोधिवृद्ध का अंकन मिलता है। कहीं–कहीं प्रतिमाओं में आसन के नीचे पृथ्वी का भी अंकन किया गया है।

चित्र सं.–2 भूमि स्पर्श मुद्रा

वरद मुद्रा

इस मुद्रा में खड़ी प्रतिमायें पायी गयी हैं, जिसमें दाहिना हाथ नीचे की तरफ और करतल सम्मुख दिखाया गया है। उनके बायें हाथ में संघाटी है। वरद मुद्रा सत्कार, दान, मद्‌द, दया और ईमानदारी का प्रतीक है।

चित्र सं.–3 वरद मुद्रा

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-11* July- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

धर्म–चक्र प्रवर्तन

इसमें बुद्ध की प्रतिमा सर्वदा पद्मासन में रहती है। इसमें हाथों का भाव, व्याख्यान–मुद्रा में होता है। दाहिने हाथ का अंगूठा और कनिष्ठिका, बायें हाथ की माध्यमिका को स्पर्श करती हुई दिखायी जाती है।

चित्र सं.–4 धर्म–चक्र प्रवर्तन मुद्रा

ध्यान मुद्रा

यह ध्यान की मुद्रा है। जो अच्छी भावना और एकाग्रता का प्रतीक है। इस मुद्रा में बुद्ध पद्मासन में होते हैं तथा उनके दोनों करतल अंक में एक के ऊपर दूसरा दिखाया गया है। प्रस्तर में बुद्ध के ऊपर बोधिवृक्ष भी है।

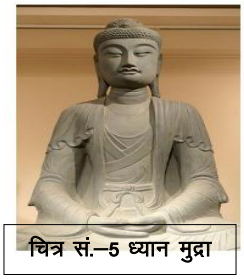

चित्र सं.–5 ध्यान मुद्रा

कर्ण मुद्रा

एक बहुत ही शक्तिशाली ऊर्जा की अभिव्यक्ति करती है। इस मुद्रा के प्रयोग से नकारात्मक शक्तियाँ समाप्त हो जाती हैं। इस इस हस्त मुद्रा को सभी बुराईयों का शत्रु भी कहा जा सकता है। यह तर्जनी और कनिष्ठ अंगुली को उठाने और अन्य अंगुलियों को मोड़कर बनती है। इस मुद्रा द्वारा आप केवल अपने हाथों को देखते हुए एक निर्धारित व ध्यान केन्द्रित ऊर्जा की अनुभूति कर सकते हैं।

चित्र सं.–6 कर्ण मुद्रा

वज्र पद्मा मुद्रा

यह शब्द अभिचल, आत्मविश्वास का अनुवादित रूप है। यह मुद्रा व्यापक स्तर पर आत्मविश्वास का आव्हान करती है। यहाँ आत्मविश्वास एक विशेष अर्थ रखता है न कि केवल यह अर्थ जो हम सभी सामान्य अर्थों में समझते हैं। जब हम बुद्ध की इस प्रतिमा को देखते हैं तो पहला सुन्दर वाक्य जो मन में आता है वह यह है कि "मै शांति के साथ आता हूँ क्योंकि मैं शांति हूँ" इस मुद्रा का अत्यंत नरम, दयालु, कान्मियी, बहुत ही आरोग्यवर्धक का प्रतीक है।

वितर्क मुद्रा

यह बुद्ध की शिक्षा पर बहस और संचारन की मुद्रा है। इस मुद्रा को अंगूठे और तर्जनी के पैरों को एक साथ जोड़कर और शेष अंगुलियों को सीधा रखकर बहुत कुछ अभय और वरद मुद्राओं की तरह, लेकिन अंगूठा तर्जनी का स्पर्श करते हुए बनायी जाती है। यह मुद्रा शिक्षण की ऐसी तकनीक की अनुभूती कराती है जिसमें बिना किसी शब्द के शिक्षा व ज्ञान का संचार होता है।

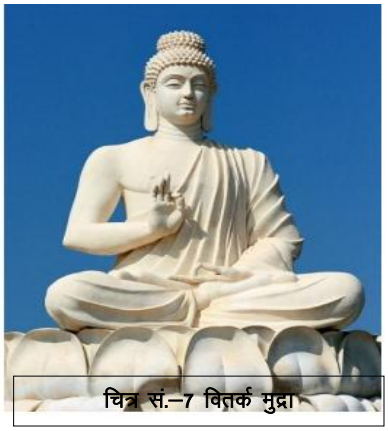

चित्र सं.–7 वितर्क मुद्रा

उत्तर बोधि मुद्रा

इसको सर्वोच्च ज्ञान की मुद्रा कहा जाता है। यह मुद्रा दोनों हाथों को हृदय पर रखकर बनाई जाती है। दोनों तर्जनी अंगुली ऊपर उठी हुई आपस में एक दूसरे को छूती है औश्र बाकी की अंगुलियां आपस में गुी होती हैं।

चित्र सं.–8 उत्तर बोधि

नमस्कार या अंजली मुद्रा

इस मुद्रा में दोनों हाथों को जोड़कर बनाई ऐसी भाव–भंगिमा है, जिसमें सामने वाले व्यक्ति को सम्मान का सन्देश देती है। इस मुद्रा में आप देख कसते हैं कि प्रार्थना के स्वर सीधे हृदय से या तीसरी आँख से निकलते हैं सर्वव्यापी आँखें बन्द करते हुए दोनों हथेलियों को

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-11* July- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मिलाते हुए छाती के मध्य में सटाऐ तथा दोनों हथेलियों को एक–दूसरे से दवाते हुये कोहनियों को दाये–बाये सीधी तान दे। तब ये दोनो हाथ जुड़े हुये हम धीरे–धीरे मस्तिष्क या ह्रदय तक पहुचते हैं तो नमस्कार मुद्रा बनती है। ऐसा इसलिये किया जाता है क्योंकि सिर्फ ह्रदय या हमारे आध्यात्मिक अन्दर जिसे तीसरी आँख भी कहा जाता है। इसे ही सत्य विचार या भावों की अभिव्यक्ति सम्भव है।

चित्र सं.–9 नमस्कार मुद्रा

निष्कर्ष

भगवान बुद्ध की मुद्राओं को देखकर यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न धर्मों में एकात्मकता तथा एक ही धर्म में अनेकात्मकता का विकास किस प्रकार हुआ। वस्तुतः यह प्रतिमाएं धर्मोपदेश के पाषाणेत्कीर्ण साकार स्वरूप हैं जो अपनी हर मुद्रा, भाव–भंगिमा और स्थिति से विराट विश्वात्मा में व्याप्त प्रत्येक पदार्थ में अर्न्तनिहित एकात्मकता का उद्घाटन करती है।

बुद्धं शरणं गच्दामिः मैं बुद्ध की शरण लेता हूँ।
धम्मं शरणं गच्दामिः मैं धर्म की शरण लेता हूँ।
सघं शरण गच्छामि : मैं संघ की शरण लेता हूँ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सिंह, अरविन्द कुमार –2007, प्राचीन भारतीय मूर्तिकला एवं चित्रकला पाषाण काल से गुप्त काल तक, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ।

राव, विश्व कुमार –2006, बौद्ध कला में नारी, स्वाति पबिलकेशन दिल्ली।

सिंह, शशिभूषण –2009, सारनाथ की बौद्ध मूर्तिकला, स्वाति पब्लिकेशन दिल्ली।

Tiwari, Usha Rani- 1998, Sculpture Mathura and Sarnath- A Comparative Study upto Gupta period, Sundeep Prakashan Delhi.

Internet Websites
http://en.m.wikipedia.org>wike>mudxa
www.bhuddhas-online.com>mudras
M.exoticindia.com>article>mudras